Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

नैतिकता, सत्यनिष्ठा व अभिवृत्ति

(भाग-1)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CSM03

दृष्टि The Vision

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

नैतिकता, सत्यनिष्ठा व अभिवृत्ति

(भाग–1)

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली–110009
दूरभाष : 87501 87501, 011-47532596
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiias.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPSC DLP

विषय सूची (Contents)

1. नीतिशास्त्र और मानवीय सह-संबंध 5–18

2. भारतीय दर्शन में नैतिक विचार 19–86

3. भावनात्मक बुद्धिमत्ता 87–96

4. महान नेताओं, प्रशासकों, सुधारकों और विचारकों के जीवन और उपदेशों से मिलने वाली शिक्षाएँ 97–176

अध्याय
1

नीतिशास्त्र और मानवीय सह-संबंध (Ethics and Human Interface)

1.1 पृष्ठभूमि
1.2 मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार तत्त्व
1.3 मानवीय कृत्यों में नैतिकता के निर्धारक एवं परिणाम
1.4 निजी और सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता
1.5 नीतिशास्त्र के विविध आयाम
1.6 मानव मूल्य
1.7 धर्म और नैतिकता

1.1 पृष्ठभूमि *(Background)*

नीतिशास्त्र और नैतिकता इन दोनों शब्दों के लिये अंग्रेज़ी में 'एथिक्स' (Ethics) शब्द का प्रयोग किया जाता है। एथिक्स (Ethics) एक ग्रीक शब्द 'एथिकोस' (Ethikos) से बना है, जिसकी उत्पत्ति 'इथोस' (Ethos) से हुई है। इथोस का उस समय अर्थ था- रीति-रिवाज़, हालाँकि आजकल इसका अर्थ 'आंतरिक विशेषता' होता है। नैतिकता के लिये प्राय: 'मोरैलिटी' (Morality) शब्द का प्रयोग भी किया जाता है। इस मोरैलिटी शब्द का निर्माण लैटिन भाषा के शब्द 'मूर्स' (Mores) से हुआ है, जिसका अर्थ है- रीति-रिवाज़। तात्पर्य यह है कि 'एथिक्स' और 'मोरैलिटी' में कोई तात्त्विक अंतर नहीं है। सामान्य जीवन में नैतिकता के लिये प्राय: मोरैलिटी शब्द का प्रयोग किया जाता है, जबकि अध्ययन के क्षेत्र में एथिक्स का। सामान्य जीवन में हम प्राय: नैतिकता के विषय में ही चर्चा करते हैं। हम अक्सर सुनते हैं कि अमुक व्यक्ति का आचरण नैतिक नहीं था, समय के किसी दौर में अमुक समाज की कोई परंपरा अनैतिक थी, वर्तमान में अमुक देश की रिफ्यूजी नीति नैतिक परिप्रेक्ष्य में सराहनीय है, आदि।

इससे एक बात तो साफ पता चलती है कि नैतिकता का संदर्भ समाज में रहने वाले किसी सामान्य व्यक्ति के आचरण, समाज की परंपराओं या किसी राष्ट्र की नीतियों के किसी विशेष अर्थ में मूल्यांकन से संबंधित है। उपरोक्त सभी विषयों के मूल्यांकन उपरांत 'उचित-अनुचित', 'अच्छा-बुरा', 'शुभ-अशुभ' आदि नैतिकता के प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। नैतिकता तथा इसके 'प्रत्ययों' का अध्ययन ही नीतिशास्त्र है। संक्षेप में कहें तो नीतिशास्त्र एक मानवीय, सामाजिक, सैद्धांतिक एवं व्यवहारपरक 'विज्ञान' है जिसके अंतर्गत किसी समाज की परंपराओं, समाज में रहने वाले सामान्य मनुष्य के आचरण या किसी देश की नीतियों के नैतिक मूल्यांकन का तथा विभिन्न दार्शनिक सिद्धांतों एवं नियमों का नैतिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जाता है।

विषय विशेष के रूप में नीतिशास्त्र *(Ethics as a special subject)*

सामान्यत: दर्शनशास्त्र के तीन प्रमुख अंग माने जाते हैं- **ज्ञानमीमांसा** (Epistemology) जिसके अंतर्गत वास्तविक ज्ञान, उसके प्रकार, उसकी प्रामाणिकता, ज्ञान की सीमा आदि का अध्ययन किया जाता है; **तत्त्वमीमांसा** (Metaphysics) जिसके अंतर्गत जगत के मूल तत्त्व/तत्त्वों, उसकी प्रकृति, उनकी संख्या आदि के विषय में अध्ययन किया जाता है तथा **नीतिशास्त्र** (Ethics)। स्पष्ट है कि नीतिशास्त्र को दर्शनशास्त्र की ही एक शाखा के रूप में मान्यता प्राप्त है। विषय विशेष के रूप में पढ़ते समय नीतिशास्त्र को एक विज्ञान के तौर पर देखा जाता है जिसके अंतर्गत इसकी विषयवस्तु का व्यवस्थित अवलोकन कर कुछ मूलभूत सिद्धांतों या नियमों की खोज की जाती है तथा पहले से स्थापित सिद्धांतों एवं नियमों के आलोक में इसकी विषयवस्तु का मूल्यांकन भी किया जाता है।

नीतिशास्त्र की विषयवस्तु के मूल में ऐसे 'सामान्य व्यक्ति' के आचरण का मूल्यांकन है जो समाज में रहता है। कहने का तात्पर्य यह है कि नैतिकता की अवधारणा समाज-सापेक्ष है। किसी निर्जन टापू पर अकेले व्यक्ति के आचरण का मूल्यांकन या अध्ययन नीतिशास्त्र का हिस्सा नहीं है। इसमें समग्र समाज का अध्ययन किया जाता है। हम नीतिशास्त्र एवं नैतिकता की चर्चा में बार-बार 'सामान्य मनुष्य' का ज़िक्र कर रहे हैं। मानवेतर प्राणियों (पशु-पक्षी, जीव-जंतु)- सात वर्ष तक के बच्चों, विक्षिप्त लोगों तथा ऐसे लोग जो किसी विशेष अवस्था (जैसे- नशे या अर्द्धबेहोशी) में हों; इन सबके अतिरिक्त जो भी मनुष्य हैं वे सामान्य मनुष्य हैं तथा उन्हीं पर नैतिकता की बात लागू होती है।

- संविधान के आदर्शों/सिद्धांतों के प्रति सर्वोपरि श्रद्धा रख कर; प्राधिकार के प्रति आज्ञाकारिता लागू करके और इन तय आदर्शों/सिद्धांतों के अंदर और दायरे में कार्य करके।
- यहाँ तक कि संविधान में भी इस अवधारणा का उल्लेख केवल चार बार (अनुच्छेद-19 में दो बार और अनुच्छेद-25 और 26 के तहत धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार में दो बार) किया गया है और इस पर लंबे समय से अधिक विचार और अध्ययन नहीं किया गया है। इस अवधारणा की संभावनाओं पर आगे और विचार करने के साथ एक नए परिप्रेक्ष्य में संविधान को समझने में सहायता मिल सकती है।

कुल मिलाकर, यदि लोकतंत्र को लोगों की प्रगति और समृद्धि की लंबी अवधि के लिये जीवित रहना है, तो नीति-निर्माण के मूलतत्त्व का गठन करने वाले सार्वजनिक विवेक, नैतिक व्यवस्था राजनीतिक नैतिकता और सांविधानिक नैतिकता को अत्यंत दृढ़ और मज़बूत रहना होगा।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

1. 'सांविधानिक नैतिकता' से आप क्या समझते हैं? सांविधानिक नैतिकता का अनुरक्षण कोई किस प्रकार करता है? **UPSC (Mains) 2019**
2. वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों का संकट सद्जीवन की संकीर्ण धारण से जुड़ा हुआ है। विवेचना कीजिये। **UPSC (Mains) 2017**
3. सामान्यत: साझा किये गए तथा व्यापक रूप से मोर्चाबंद नैतिक मूल्यों और दायित्वों के बिना न तो कानून, न तो लोकतंत्रीय सरकार, न ही बाज़ार अर्थव्यवस्था ठीक से कार्य कर पाएँगे। इस कथन से आप क्या समझते हैं? समकालीन समय के उदाहरण द्वारा समझाइए। **UPSC (Mains) 2017**
4. स्पष्ट कीजिये कि आचार नीति समाज और मानव को किस प्रकार भूला करती है? **UPSC (Mains) 2016**
5. विधि एवं आचार नीति मानव आचरण को नियंत्रित करने वाले दो उपकरण माने जाते हैं ताकि आचरण को सभ्य सामाजिक अस्तित्त्व के लिये सहायक बनाया जा सके। **UPSC (Mains) 2016**
   (a) चर्चा कीजिये कि वे इस उद्देश्य की किस प्रकार पूर्ति करते हैं?
   (b) उदाहरण देते हुए यह बताइये कि ये दोनों अपने उपागमों में किस प्रकार एक-दूसरे से भिन्न हैं?
6. 'पर्यावरणीय नैतिकता' का क्या अर्थ है? इसका अध्ययन करना किस कारण महत्त्वपूर्ण है? पर्यावरणीय नैतिकता की दृष्टि से किसी एक पर्यावरणीय मुद्दे पर चर्चा कीजिये। **UPSC (Mains) 2015**
7. 'मूल्यों' व 'नैतिकताओं' से आप क्या समझते हैं? व्यावसायिक सक्षमता के साथ नैतिक भी होना किस प्रकार महत्त्वपूर्ण है? **UPSC (Mains) 2013**
8. कुछ लोगों का मानना है कि मूल्य समय और परिस्थिति के साथ बदलते रहते हैं जबकि अन्य दृढ़ता से मानते हैं कि कुछ मानवीय मूल्य सर्वव्यापक व शाश्वत हैं। इस संबंध में आप अपनी धारणा तर्क देकर बताइए। **UPSC (Mains) 2013**
9. किसी कर्म को नैतिक या अनैतिक सिद्ध करने वाले निर्धारक तत्त्व कौन-से हैं?
10. मूल्यों के विकास में परिवार, समाज और शिक्षण संस्थाओं की क्या भूमिका होती है?
11. नीतिशास्त्र को परिभाषित कीजिये। यह विज्ञान है या कला?
12. नैतिकता के संबंध में उदारवादी और मार्क्सवादी दार्शनिक किन बिंदुओं पर एक-दूसरे के विपरीत छोरों पर खड़े दिखाई देते हैं?
13. मूल्य क्या हैं? उनकी प्रमुख विशेषताएँ स्पष्ट करते हुए निर्धारित कीजिये कि वे अपनी प्रकृति में वस्तुनिष्ठ होते हैं या आत्मनिष्ठ?
14. 'प्रत्येक नैतिक व्यवस्था भीतर से अनैतिक होती है।' इस कथन का अर्थ स्पष्ट करें।
15. क्या नैतिक होने के लिये धार्मिक होना ज़रूरी है? क्या धार्मिक होने के लिये नैतिक होना अनिवार्य है? इन प्रश्नों के संदर्भ में धर्म और नैतिकता के पारस्परिक संबंधों की पड़ताल कीजिये।

अध्याय
2

भारतीय दर्शन में नैतिक विचार (Ethical Thoughts in Indian Philosophy)

2.1 वेदों के नैतिक विचार
2.2 उपनिषद व गीता के नैतिक विचार
2.3 चार्वाक दर्शन के नैतिक विचार
2.4 जैन दर्शन के नैतिक विचार
2.5 बौद्ध दर्शन के नैतिक विचार
2.6 महात्मा गांधी के नैतिक विचार
2.7 पाश्चात्य नैतिक विचार
2.8 आधुनिक पाश्चात्य नैतिक विचार
2.9 कांट के नैतिक विचार
2.10 विकासवादी नीतिशास्त्र
2.11 अंत:प्रज्ञावाद

भारतीय दर्शन को मुख्य रूप से वैदिक दर्शन तथा वेदोत्तर दर्शन में विभाजित किया गया है। वैदिक दर्शन का आधार चार वेद हैं जिन्हें अपौरुषेय माना जाता है। वेदोत्तर को नास्तिक दर्शन तथा आस्तिक दर्शन में विभाजित किया जाता है। यहाँ आस्तिक या नास्तिक शब्द का ईश्वर की अवधारणा से कोई स्पष्ट संबंध नहीं है। आस्तिक दर्शन वे दर्शन हैं जो वेदों को सत्य मानते हैं अत: अपनी विवेचना के लिये वैदिक ज्ञान को आधार भूमि के रूप में प्रयुक्त करते हैं जबकि नास्तिक दर्शन वेदों में विश्वास नहीं करते। नास्तिक दर्शन के अंतर्गत चार्वाक, जैन तथा बौद्ध दर्शन आते हैं जबकि आस्तिक दर्शन के अंतर्गत सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्वमीमांसा और उत्तरमीमांसा या वेदांत आते हैं। इन 6 आस्तिक दर्शनों को षट्दर्शन या हिंदू दर्शन या सनातन दर्शन भी कहा जा सकता है। इस वर्गीकरण को निम्नांकित चित्र से समझा जा सकता है–

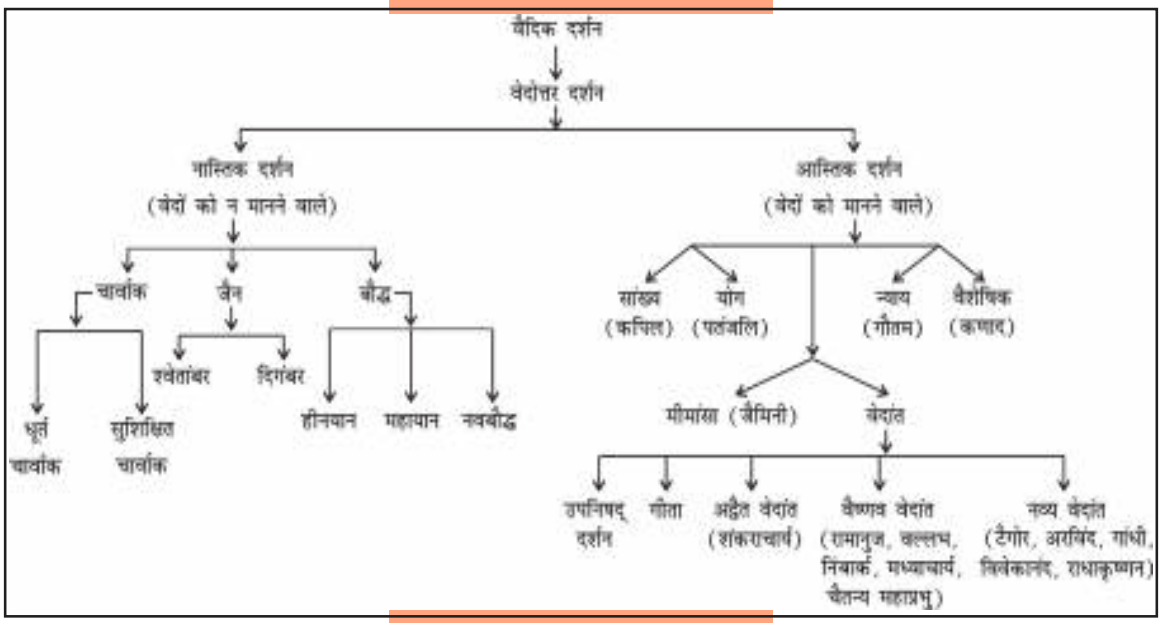

भारत में नीतिशास्त्र का विकास स्वतंत्र रूप से न होकर तत्त्वमीमांसा के साथ मोक्ष के साधन के रूप में हुआ है। इसलिये प्राचीन भारत में नीतिमीमांसा पर कोई स्वतंत्र पुस्तक नहीं है। परंतु वेदों में नीति के कुछ तत्त्व स्पष्ट परिलक्षित होते हैं।

2.1 वेदों के नैतिक विचार *(Ethical Thoughts of The Vedas)*

वेदों में भारतीय दर्शन का सबसे आरंभिक स्वरूप है। वेदों के नैतिक विचार प्रवृत्तिमार्गी हैं अर्थात् इनमें भौतिक या ऐंद्रिक सुखों पर बल दिया गया है। वैदिक काल की नैतिकता बहिर्मुखी नैतिकता (Extrovertive Ethics) है। इसमें आंतरिक प्रेरणा से नहीं वरन् बाह्य दबावों के कारण नैतिकता का पालन किया जाता है।

अध्याय
3

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence)

3.1 अवधारणा का ऐतिहासिक विकास
3.2 सेलोवी और मेयर का मॉडल
3.3 डेनियल गोलमेन का मॉडल
3.4 भावनात्मक बुद्धिमत्ता के लाभ
3.5 भावनात्मक बुद्धिमत्ता सिखाने के तरीके

3.1 अवधारणा का ऐतिहासिक विकास *(Evolution of the Concept)*

डार्विन ने माना था कि व्यक्ति की उत्तरजीविता व अनुकूलन में इस बात का भी महत्त्व है कि वह अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति कैसे तथा कितनी करता है। उसी शताब्दी (19वीं) में जब हीगेल जैसे बुद्धिवादी बुद्धि तथा अमूर्तीकरण को मनुष्य की सर्वोच्च क्षमता बता रहे थे, अस्तित्ववादी विचारक सोरेन कीर्केगार्द ने कहा था कि मनुष्य की पहचान उसकी भावनाओं से होनी चाहिये न कि बुद्धि से। उस समय हीगेल के सम्मुख कीर्केगार्द की बात को महत्त्व नहीं दिया गया।

1920 में थोर्नडाइक ने बुद्धिमत्ता के प्रकारों पर विचार करते हुए सामाजिक बुद्धिमत्ता या सोशल इंटेलिजेंस की धारणा दी जिसका अर्थ है सामाजिक संबंधों को ठीक से निभाने के लिये उचित विकल्प चुनने की क्षमता। वर्तमान में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के अंतर्गत इस विशेषता को भी शामिल किया जाता है।

1940 में डेविड वेसलर ने लिखा कि व्यक्ति की सफलताओं में सिर्फ बौद्धिक पक्ष शामिल नहीं है बल्कि भावनात्मक पक्षों को महत्त्व दिये जाने की भी ज़रूरत है। 1950 के दशक में प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक अब्राहम मैस्लो ने मनुष्य के भावनात्मक पक्षों के महत्त्व को रेखांकित किया।

1983 में हॉवर्ड गार्डनर ने बहुल बुद्धिमत्ता सिद्धांत (Theory of Multipule Intelligences) प्रतिपादित किया जिसमें बुद्धिमत्ता के 8 में से दो प्रकार ऐसे थे जिनका गहरा संबंध भावनात्मक बुद्धिमत्ता से माना जाता है। पहला था अंतरवैयक्तिक बुद्धिमत्ता जिसके अंतर्गत दूसरों के इरादों, मन:स्थितियों, अनुभूतियों, स्वभावों, इच्छाओं तथा प्रेरणाओं को समझना तथा विभिन्न व्यक्तियों को कार्य की सफलता के लिये परस्पर अनुकूलित करना शामिल है। दूसरी क्षमता थी अंत:वैयक्तिक बुद्धिमत्ता जिसका अर्थ है व्यक्ति का स्वयं अपनी क्षमताओं, कमज़ोरियों, इच्छाओं, विशिष्टताओं आदि को समझना तथा अपनी भावनाओं का प्रबंधन कर पाना।

1985 में वेन पेन (Wayne Payne) ने पहली बार भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence) शब्द का प्रयोग पारिभाषिक अर्थ में किया। हालाँकि 1966 में बार्बरा ल्यूनर ने भी इस शब्द का प्रयोग किया था। 1987 में पहली बार भावनात्मक लब्धि (Emotional Quotient) शब्द का प्रयोग कीथ बीसले ने किया था।

इस पृष्ठभूमि के बाद 1990 में दो प्रसिद्ध अमेरिकी मनोवैज्ञानिकों पीटर सेलोवी तथा जॉन मेयर ने पहली बार भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर एक विस्तृत निबंध लिखा जिसका शीर्षक था- 'Emotional Intelligence'। आगे चलकर 1997 में उन्होंने एक और पुस्तक लिखी 'What is Emotional Intelligence'।

1995 में डेनियल गोलमेन (जो कि मनोविज्ञान के अनुसंधानकर्ता और न्यूयॉर्क टाइम्स में वैज्ञानिक विषयों के लेखक थे) ने एक अत्यंत लोकप्रिय पुस्तक लिखी जिसने भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विचार को विश्वविख्यात बना दिया। पुस्तक का नाम था- 'Emotional Intellignence : Why it can matter more tha IQ'। इसके बाद इन्होंने कई अन्य पुस्तकें इसी विषय पर लिखीं। डेनियल गोलमेन के अनुसार भावनात्मक बुद्धिमत्ता मूलत: एक सीखी जाने वाली योग्यता है। लेकिन हमारी जैविक परिस्थितियाँ एक परिधि तय करती हैं जिसके भीतर हमारी भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास वातावरण आदि कारकों द्वारा सुनिश्चित होता है (उदाहरण के लिये, यदि कोई व्यक्ति बचपन से ही उच्च रक्तचाप का शिकार है तो अपनी भावनाओं पर नियंत्रण करना उसके लिये कठिन होगा)।

अध्याय
4

महान नेताओं, प्रशासकों, सुधारकों और विचारकों के जीवन और उपदेशों से मिलने वाली शिक्षाएँ (Lessons from the Life and Preachings of Great Leaders, Administrators, Reformers and Thinkers)

4.1 भारत के महान नेता	4.5 भारत के महान सुधारक
4.2 विश्व के महान नेता	4.6 विश्व के महान सुधारक
4.3 भारत के महान प्रशासक	4.7 भारत के महान विचारक
4.4 विश्व के महान प्रशासक	4.8 विश्व के महान विचारक

संसार के महान नेताओं, प्रशासकों और सुधारकों ने अपने जीवन एवं उपदेशों से संसार एवं मानवता को नई राह दिखाई है। उनके प्रयास न केवल उनके समाज के लिये अपितु समस्त मानव जाति के उत्थान के लिये मील का पत्थर साबित हुए हैं। समय साक्षी है कि उनकी वाणियों की प्रासंगिकता और महत्ता अक्षुण्ण रही है। उनके कर्म और विचार मानव सभ्यता को और अधिक ऊँचाई की ओर ले जाने में सक्षम साबित हुए हैं। इन नेताओं, सुधारकों एवं प्रशासकों के प्रयास किसी धर्म, वर्ण, प्रजाति आदि के लिये नहीं होकर मानवमात्र के कल्याण के लिये समर्पित थे; इसलिये उन्हें किसी सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। इन महान लोगों के जीवन के सिद्धांतों को हम उनके व्यवहार में भी देख सकते हैं। इनके सिद्धांतों और आचरण में भेद नहीं होता था। ये जिस तरह के जीवन की आशा अपने अनुयायियों से करते थे, वैसा जीवन खुद भी जीते थे। इनके चरित्र और आचरण में भिन्नता नहीं मिलती है। ऐसे ही कुछ महत्त्वपूर्ण नेताओं, सुधारकों एवं प्रशासकों का परिचय नीचे दिया गया।

4.1 भारत के महान नेता *(Great Leaders of India)*

जवाहरलाल नेहरू *(Jawaharlal Nehru)*

जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवंबर, 1889 को इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपने घर पर निजी शिक्षकों से प्राप्त की। पंद्रह वर्ष की आयु में वे इंग्लैंड चले गए और दो साल बाद उन्होंने कैंब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश किया, जहाँ से उन्होंने 1910 में प्राकृतिक विज्ञान में स्नातक तथा लॉ की डिग्री प्राप्त की। 1912 में वे बैरिस्टर बने तथा भारत लौटकर इलाहाबाद में वकालत शुरू की। परंतु वकालत के पेशे से अधिक उन्हें राजनीति में रुचि थी। वर्ष 1912 में वे सीधे राजनीति से जुड़ गए। उन्होंने एक प्रतिनिधि के रूप में बाँकीपुर सम्मेलन में भाग लिया एवं 1919 में इलाहाबाद के होमरूल लीग के सचिव बने। वर्ष 1916 में वे महात्मा गांधी से पहली बार मिले जिनसे वे काफी प्रेरित हुए। उन्होंने वर्ष 1920 में उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ ज़िले में पहले किसान मार्च का आयोजन किया। वर्ष 1920-22 में 'असहयोग आंदोलन' में सक्रियता से भाग लेने के कारण उन्हें दो बार जेल जाना पड़ा।

जवाहरलाल नेहरू सितंबर 1923 में अखिल भारतीय कॉन्ग्रेस कमेटी के महासचिव बने। उन्होंने वर्ष 1926 में इटली, स्विट्ज़रलैंड, इंग्लैंड, बेल्जियम, जर्मनी एवं रूस का दौरा किया। उन्होंने 1922 में मास्को में अक्टूबर समाजवादी क्रांति की दसवीं वर्षगाँठ समारोह में भाग लिया। इससे पहले वर्ष 1926 में मद्रास कॉन्ग्रेस में कॉन्ग्रेस कार्यकारिणी को आज़ादी के लक्ष्य के लिये प्रतिबद्ध करने में नेहरू की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। वर्ष 1928 में लखनऊ में साइमन कमीशन के खिलाफ एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए उन पर लाठीचार्ज किया गया था। 29 अगस्त, 1928 को उन्होंने सर्वदलीय सम्मेलन में

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 8750187501, 011-47532596